प्र मा ण प त्र

मैं यह प्रमाणित करता हूँ कि कु. सुरेखा चिंतामण जोशी ने मेरे निर्देशन में " खजुराहो का शिल्पी - एक अनुशीलन " लघु-शोध-प्रबंध एम.फिल. उपाधि के लिए लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना है। यह लघु-शोध-प्रबंध पूर्ण योजना के अनुसार लिखा गया है। जो तथ्य इस लघु-शोध-प्रबंध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार वे सही हैं।

(डॉ. व्ही.व्ही. द्रविड)
निर्देशक

कोल्हापूर
दिनांक : 30.11.Cc

प्र ख्या प न

यह लघु-प्रबंध मेरी मेरी मौलिक रचना है, जो एम.फिल. के लघुप्रबंध के रूप में प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत नही की गई है।

Joshi S.C.

(कु. एस.सी. जोशी)

कोल्हापूर

दिनांक : 30-11-88

अनुक्रमणिका

पृष्ठांक

आमुख १-२

भूमिका ३-७

अध्याय-१ : हिन्दी नाटकों के विकास की रूपरेखा - ८-२२

संस्कृत नाटकों की परम्परा, भारतेन्दु पूर्व नाटक, भारतेन्दु युग, भारतेन्दु युगीन अन्य नाटककार, द्विवेदी युग, प्रसाद युग, प्रसादकालीन अन्य नाटकार, प्रसादोत्तर युग (स्वतंत्रतापूर्व कालखंड), स्वातंत्र्योत्तर कालखंड और आधुनिक नाटक - स्कांकी नाटक, गीतिनाट्य, प्रतीक नाटक, रेडियो और दूरदर्शन नाटक, एवं निष्कर्ष।

अध्याय-२ : डॉ. शंकर शेष के नाटक एवं अन्य साहित्यिक उपलब्धियाँ - २३-५०

डॉ. शंकर शेष का जीवनवृत्त, व्यक्तित्व, डॉ. शेष के नाटक तथा अन्य साहित्यिक उपलब्धियाँ, निष्कर्ष।

अध्याय-३ : `खजुराहो का शिल्पी` का नाट्यकला की दृष्टि से विवेचन - ५१-१३०

कथावस्तु, कथावस्तु के विविध स्त्रोत तथा कथावस्तु का अनुशीलन: कथावस्तु, कथावस्तु में ऐतिहासिकता, कथावस्तुमें दंतकथात्व और तर्क, कथावस्तु में कल्पनातत्व और तर्क, कथावस्तु में तर्क का स्थान, कथावस्तु का अनुशीलन - कथावस्तु का परिमाण, कथावस्तु में

पृष्ठांक

कथाओंका संगठन, कथावस्तु की आंतररचना, कथावस्तु की आंतररचना में परावृत्ति (Reversal) और अभिज्ञान (Recognition), नाटक की कथावस्तु में कुतूहल, ` खजुराहो का शिल्पी ` की कथावस्तु में संघर्ष एवं निष्कर्ष ।

पात्र और चरित्र-चित्रण : पात्र परिचय - महाराज यशोवर्मन, शिल्पी मेघराज आनंद, माधव, चंडवर्मा, धर्मगुरू, तान्त्रिक, पुष्पा तथा अलका, ` खजुराहो का शिल्पी ` में चरित्र-चित्रण की प्रणालियाँ तथा निष्कर्ष ।

नाट्यशिल्पविधि : ` खजुराहो का शिल्पी ` के संभाषण, भाषा, काव्यात्मकता, देश, काल तथा वातावरण, रचनाविधान, नाटक का शीर्षक, उद्देश्य, दोष तथा निष्कर्ष ।

अध्याय-४ : रंगमंच और ` खजुराहो का शिल्पी ` की मंचीयता - १३१-१५१

प्राचीन रंगमंच, रामायण, महाभारत कालीन रंगमंच, गुप्तकालीन रंगमंच, मध्यकाल : मंचीयता के अभाव का युग, आधुनिक युग में नाट्य मंचीकरण, डॉ. शेष का रंगमंच के प्रति योगदान, ` खजुराहो का शिल्पी ` की मंचीयता, दो दृश्यबंध, मंचसज्जा, रंगसंकेत, सूच्य अंशों का प्रयोग, ध्वनीका प्रयोग, गीत-संगीत, अभिनेयता, प्रकाश योजना, रंगभूषा, मंच एवं निष्कर्ष ।

अध्याय-५ : उपसंहार - १५२-१६१

मूल कथ्य, प्रायोगिकता, चरित्र निर्माण, रेडियो शिल्प और मंचीयता तथा दोष ।

संदर्भ ग्रंथ सूचि १६२-१६५

आ मु ख

अर्जुन के बहाने सारे जगत् के लिए प्रस्तुत की गई गीता में मनुष्य के मन के संबंध में सूचना देते हुए भगवान कृष्ण ने कहा है -

" प्रमादमोहौ तमस: जायेते "

(गीता अ.१४, श्लोक १७)

प्रमाद और मोह तमोगुण से उत्पन्न होते हैं, इसलिए वे अँधेरे अथवा अज्ञान की ओर ले जाते हैं। इससे मनुष्य कर्तव्य करना भूल जाता है और अवश होकर वही करता है, जो नहीं करना चाहिए। गीता के अंत में भगवान कृष्ण ने अर्जुन से कहा है -

" कर्तुनेच्छसि यन् मोहात् करिष्यसि अवशोऽपि तत् "

(गीता अ.१८ श्लो. ६०)

" मोह के कारण तुम अभीतक कर्तव्य नहीं करना चाहते थे, क्यों कि तुम अवश याने पराधीन बने थे। " भगवान के उपदेश से अर्जुन मोह को मात कर गया और इस प्रकार साधारण मनुष्य के जीवन में भी मोह के अवसर बार-बार आते रहते हैं। वह उसका शिकार बनता है, किन्तु संयत पुरुष, जो जीवन में कर्तव्य का महत्व जान लेता है, ऐसे अवसरों पर मोह को पराजित करके निरंतर आगे बढता है।

मोह मनुष्य के जीवन का सबसे बडा विकार है। मोह के क्षणों की ओर आकर्षित होना मनुष्य का स्वभाव-धर्म ही है। मोह से वशिभूत होकर कभी-कभी मनुष्य का पैर फिसल भी जाता है। तो कभी-कभी मनुष्य उससे उबरनेकी या ऊपर उठने की भी कोशिश करता है। इस प्रकार मनुष्य के मन में मोह के प्रति आकर्षण-अपकर्षण का द्वन्द्व बराबर चलता ही रहता है। इसी

द्वन्द्व का चित्रण डॉ. शंकर शेष ने ` खजुराहो का शिल्पी ` में किया है । मनुष्य के जीवन में मोह के दाण कैसे आते है, वह उसमें कैसे फँस जाता है और उससे ऊपर उठने का प्रयास कैसे करना चाहिए आदि बातों का विवेचन पौराणिक, ऐतिहासिक तथा वर्तमान संदर्भों के जरिए इस नाटक में किया गया है । इस संदर्भ को सामने रखकर नाटक के सामान्य तत्वों के आधारपर डॉ. शंकर शेष के ` खजुराहो का शिल्पी ` नाटक का अनुशीलन करने का प्रयास किया जा रहा है ।

प्रा.कु. सुरेखा चिं. जोशी